

शेंदुर लाल चढायो आरती

शेंदुर लाल चढायो अच्छा गजमुखको । दोंदिल लाल बिराजे सुत
गौरीहरको ॥ हात लिये गुडलड्डू साईं सुरवरको । महिमा कहे न जाय
लागत हुं पदको ॥१॥ जय जयजी गणराज विद्या सुखदाता । धन्य
तुम्हारो दर्शन मेरा मन रमता ॥धृ॥ अष्टौ सिद्धी दासी संकटको वैरी ।
विघ्नविनाशन मंगलमूरत अधिकारी ॥ कोटीसुरजप्रकाश ऐसी छबि
तेरी । गंडस्थलमदमस्तक झुले शशिवहारी ॥२॥ जय जयजी गणराज
विद्या सुखदाता । धन्य तुम्हारो दर्शन मेरा मन रमता ॥धृ॥ भावभगतिसे
कोई शरणागत आवे । संतति संपति सबही भरपूर पावे ॥ ऐसे तुम
महाराज मोको अति भावे । गोसावीनंदन निशिदिन गुण गावे ॥३॥
जय जयजी गणराज विद्या सुखदाता । धन्य तुम्हारो दर्शन मेरा मन
रमता ॥धृ॥